आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:08-11-14

हमारे सर्व दुखों कि एक ही दवाई देकर, हमारे ६३ जन्मो के दुखों को दूर करने वाले, सुख कर्ता - दुख हर्ता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप है अविनाशी वैध, जो एक ही महामन्त्र से तुम्हारे सब दुख दूर कर देते है.

हम आत्माये जब द्वापर से देह-अभिमान में आते है तो हमारे में धीरे-धीरे सब विकार आने लगते हैं. यह विकार ही हमें दुख देते है लेकिन हम अपने सत्य स्वरूप को न जानने के कारण, भगवान को भी न जानने के कारण, भगवान को ढूँढते दर-दर भटकते थे. आत्मा को यह मालूम है कि जब मैं विकारों से दुखी हुई थी तो मुझे, स्वयं भगवान ने आकर ही इन दुखों से निकाला था और अथाह सुख, शांति और समृद्धि दी थी. इसलिए फिर से सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए आत्मा कहा-कहा भटकती है. लेकिन अन्त तक, जब स्वयं भगवान इस धरा पर आकर, आत्मा का और अपना सच्चा परिचय न दे तब तक आत्मा को सच्चे सुख की प्राप्ति होती नहीं. बाबा ने हमें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के ड्रामा का सारा नॉलेज देकर हमें दो युगों के दुखो से मुक्त होने का रास्ता बताया हैं. विकारों से मुक्त होकर मनुष्य से देवी-देवता बनने का रास्ता बताया है.

बाबा की आज की मुरली में, बाबा हमें अविनाशी वैध बनकर, एक ही महामन्त्र देकर हमारे सारे दुखो से हमें दूर कर रहे हैं. बाबा की आज की मुरली से कुछ महावाक्यों को निकाल कर, स्वयं की आत्मिक स्थिति बनाकर उस परमात्मा की याद में पढ़ेंगे, जिसे हमारे दो युगों के अथाह दुख दूर हो जाये.

- सारे संसार के मनुष्य "मन की शांति, मन की शांति दो" कह कर हैरान होते हैं. लेकिन बाबा ने समझाया है शांति तो आत्मा का स्वधर्म हैं. अपने स्वधर्म को न जानने के कारण मांगते ही रहते है.

- यह तुम जानते हो कि यह रावण राज्य है. लेकिन यह कोई नहीं समझते कि रावण सारी दुनिया का आम और भारत का ख़ास दुश्मन है. इसलिए ही रावण को हर वर्ष जलाते भी है फिर भी ५ विकारों में फ़सते ही जाते हैं. इसका निमित कौन? रावण. यहाँ मनुष्य का जन्म

ही भ्रष्टाचार से होता है तो यह रावण राज्य हुआ ना. अब बाप आये तुम्हें इस अथाह दुखों से निकाल अथाह सुख में ले जाने.

- देखो मनुष्यों की बुद्धि क्या बन पड़ी है. न जानवर है न मनुष्य है. कोई काम के नहीं. स्वर्ग को जानते ही नहीं. समझते है बस यही दुनिया भगवान ने बनाई है. दुख में याद भी भगवान को करते हैं - हे भगवान, इस दुख से छुड़ाओ. परन्तु इस कलियुग में तो कोई सुखी हो न सके. मनुष्यों को दुख तो जरूर भोगना ही है. सीढ़ी उतरनी ही है. बाबा ने तुम्हें नई दुनिया से पुरानी दुनिया तक का सारा राज (razz) समझाया हैं.

- बाबा तो अविनाशी वैध है ना. तुम्हें सुखी बनने की एक ही दवाई देते है. कहते है सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, सतोप्रधान बन जायेंगे. फिर सुख ही सुख होगा. गाया भी जाता है - बाप दुख हर्ता, सुख कर्ता है.

- यह सारा आत्मा और जीव दोनों का खेल है. निराकार आत्मा अविनाशी है और साकार शरीर विनाशी है, इनका खेल है. अब बाप कहते है देह सहित देह के सब सम्बन्ध भूल जाओ. ग्रहस्थ व्यवहार में रहते अपने को ऐसा समझो कि अब हम को वापस जाना है.

- दवाई यह है याद की यात्रा. एक ही दवाई से तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, अगर बाबा को निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करेंगे तो.

- बाबा को याद करने से हमारा चेहरा ही खुशी से खिल उठता है. मुख पर मुस्कराहट आ जाती है. हम जानते है बाबा को याद करने से हम ऐसा, लक्ष्मी-नारायण जैसा बनेंगे. आधाकल्प के लिए हमारे सब दुख दूर हो जायेंगे. बाबा को याद करने से ही हम सतोप्रधान बन जायेंगे. बेहद के बाप को याद करने से खुशी होती है कि हम फिर से विश्व के मालिक बनेंगे.

ॐ शांति.